मूल्य केवल बारह आना

जुबली-नम्बर

Price Annas Twelve only

वर्ष २
खण्ड १

संख्या १
पूर्ण संख्या
५१

भविष्य

सचित्र राष्ट्रीय साप्ताहिक



लुत्फ़ तो जब है, कि ऐ मेरे शहीदाने वतन! मर के भी हाथ से छूटे न तुम्हारा झण्डा !!
है जो यह जोशे-वतन ; हुब्बे-वतन ऐ "बिस्मिल" ! कभी गड़ जायगा भारत में हमारा झण्डा !!

भविष्य

वर्ष १, खण्ड १ | इलाहाबाद—विजय दशमी—२ अक्टूबर, १९३० | संख्या १, पूर्ण संख्या १

'भविष्य' का आदर्श और कार्यक्रम

"भविष्य" का जन्म ऐसे समय में हो रहा है, जब कि हमारा देश एक बहुत ही सङ्कटमय और साथ ही महत्वपूर्ण युग में होकर गुज़र रहा है। अपने जन्म-सिद्ध अधिकार 'स्वराज्य' के लिए बहुत समय तक प्रार्थना, चेष्टा और आन्दोलन करने पर भी जब भारतवासियों को अपने उद्देश्य में सफलता प्राप्त न हुई तो उन्होंने विदेशी शासन से सम्बन्ध तोड़ कर पूर्ण स्वतन्त्र होने का निश्चय कर लिया और इसके लिए सविनय आज्ञाभङ्ग अथवा सत्याग्रह का सहारा लिया। गवर्नमेण्ट ने भी अपनी सत्ता की रक्षा करने का दृढ़ सङ्कल्प प्रकट किया और लड़ाई छिड़ गई। शीघ्र ही यह संग्राम देश के कोने-कोने में व्याप्त हो गया और जोशीले नवयुवक ही नहीं, वरन् वृद्ध, बालक और महिलाएँ तक इसके रङ्ग में रँग गईं। आज भारत का शायद ही कोई व्यक्ति ऐसा होगा, जो इस संग्राम से अनजान हो और जिस पर इसका किसी न किसी रूप में असर न पड़ा हो। भारतवासी ही नहीं, विदेशी भी इसके प्रभाव से नहीं बच सके हैं और आज आप संसार के किसी भी राजनीति की चर्चा करने वाले पत्र को उठा लीजिए, भारतीय सत्याग्रह-संग्राम का कुछ न कुछ हाल उसमें आपको मिल ही जायगा। दिन पर दिन इस संग्राम की गम्भीरता और भीषणता बढ़ती जाती है और कुछ समय पश्चात् हमको किस परिस्थिति का सामना करना पड़ेगा, इसकी कल्पना तक कर सकना कठिन है।

समाचार-पत्रों और प्रेसों को इस सङ्कटकाल में विशेष कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है। गवर्नमेण्ट समझती है कि पत्रों और प्रेसों द्वारा ही आन्दोलन बढ़ता है और इनको दबा देने से वह अपङ्ग हो जायगा! इस धारणा के वशीभूत होकर वह न्याय-अन्याय का विचार ताक़ पर रख कर तरह-तरह के दमनकारी उपायों द्वारा समाचार-पत्रों का गला घोंट देना चाहती है या उनको इस प्रकार दबा हुआ और भयभीत रखना चाहती है कि उनकी आवाज़ भी न सुनाई दे!

ऐसे आपत्ति-काल में किसी नवीन समाचार-पत्र के प्रकाशित करने का उद्योग करना, यदि पूरा पागलपन नहीं, तो जान बूझ-कर आग में कूदना ज़रूर है। इस कार्य की कठिनाइयों और ख़तरों का अनुभव वे ही कर सकते हैं, जिन्होंने कभी इस कण्टकाकीर्ण क्षेत्र में पैर रक्खा है और इसके कड़वे फलों को चक्खा है। पर साथ ही यह भी सच है कि पत्रों की आवश्यकता जितनी अधिक ऐसे समय में हुआ करती है, उतनी कभी नहीं होती। यह उत्तरदायित्व को समझने वाले पत्रों का ही कर्तव्य है कि ऐसे हलचल के समय में, जब कि आँखों के सामने नित्यप्रति रोमाञ्चकारी घटनाएँ घटती हैं और हृदय को दहला देने वाले दृश्य देखने में आते हैं, तब साधारण लोगों को सुधबुध बिसार देने से बचावें। उन्हें न तो भय से भयभीत होकर मनुष्यत्व को तिलाञ्जलि देकर भेड़ और बकरी बनने दें और न क्रोध तथा रोष से पागल होकर जङ्गली पशु! ऐसे विकट अवसरों पर निष्पक्ष और निर्भीक नीति वाले समाचार-पत्र ही जनता के ज्ञान और विवेक की रक्षा कर सकते हैं और उसे आत्म-गौरव के विरुद्ध कोई काम करने से बचा सकते हैं।

"भविष्य" के जन्म का यही कारण और उद्देश्य है। यह जनता को सत्य और न्याय पर डटे रह कर अपने जन्मसिद्ध अधिकारों के लिए वीरतापूर्वक संग्राम करना सिखलाएगा। आत्म-सम्मान दुनिया में बहुत बड़ी चीज़ है और सैकड़ों वर्षों की ग़ुलामी के फलस्वरूप भारतवासी इस गुण से प्रायः शून्य होगए हैं, और बात-बात में दब जाना तथा अपमान को चुपचाप बर्दाश्त कर लेना उनका स्वभाव बन गया है। इसी आत्म-सम्मान की कमी से वे अपनी मातृभूमि को पराधीन देख कर व्याकुल नहीं हो जाते और न उनको विदेशियों के शासन में रहना अपमान-जनक प्रतीत होता है। "भविष्य" भारतीय जनता में आत्म-सम्मान का वह प्रचण्ड भाव जाग्रत करने की चेष्टा करेगा, जो कि लोगों की आत्मा को तलमला दे और ग़ुलामी की दशा को उनके लिए असह्य बना दे! हमारे यहाँ दूसरी बड़ी कमी राष्ट्रीयता के भाव की है जो आत्म-सम्मान-शून्य लोगों में प्रायः पाई जाती है। इसके कारण हम जैसा चाहिए सङ्गठित रूप से काम नहीं कर सकते और साधारण से साधारण बातों में ही हममें फूट पड़ जाती है।

पर इन बातों से यह न समझ लेना चाहिए कि "भविष्य" भारतवासियों को किसी तङ्ग दायरे में बन्द कर देना चाहता है अथवा वह उनको—'हमी सब कुछ हैं—हमारी सभ्यता ही सर्वश्रेष्ठ है—दुनिया के सब देश हमारे शिष्य हैं'—का पाठ पढ़ाना चाहता है! हम राष्ट्रीयता के साथ-साथ अन्तर्राष्ट्रीयता के भी क़ायल हैं, और हमारा विश्वास है कि विश्वव्यापी शान्ति और कल्याण की रक्षा तथा संसार में रहने वाले समस्त मनुष्यों और जातियों की—जिनमें हम भी शामिल हैं—उन्नति और वृद्धि के लिए यह परमावश्यक है कि दुनिया के विभिन्न देशों में मेल-मिलाप बढ़े और भाईचारे का बर्ताव होने लगे। जिस प्रकार हम अपने ऊपर विदेशी शासन होने से व्याकुलता अनुभव करते हैं, उसी प्रकार हम संसार के किसी भी देश पर विदेशी शासन का रहना निन्दनीय और घृणित समझते हैं। इसलिए केवल उन देशों को छोड़ कर, जो अपने स्वार्थ-साधन के लिए हमारे साथ अन्याय और अत्याचार का बर्ताव करते हैं और हमको तरह-तरह से हानि पहुँचाने की चेष्टा करते हैं, हम समस्त राष्ट्रों के साथ—चाहे वे एशियाई हों, चाहे यूरोपियन और चाहे अमेरिकन—एकता, समता और भ्रातृभाव का बर्ताव करने के अभिलाषी हैं।

भारतवर्ष की सबसे बड़ी समस्या दरिद्रता की है। जिनको हम अपना अन्नदाता कहते हैं अथवा जो हमारे हाथ-पैर हैं, उन किसान-मज़दूरों की ही अकथनीय दुर्दशा है!! रात-दिन परिश्रम करते रहने पर भी सुखपूर्वक रहना तो दूर, वे सूखा अन्न और मोटा कपड़ा भी पर्याप्त मात्रा में नहीं पाते। उनकी गाढ़ी कमाई का कुछ हिस्सा लुटेरे छीन लेते हैं और कुछ ठग लोग उड़ा लेते हैं और उनको तथा उनके स्त्री-बच्चों को अक्सर रोटियों के भी लाले पड़े रहते हैं! उनकी मलिन सूरत, हड्डियाँ निकले हुए बदन और फटे-पुराने चिथड़ों को देख कर, और साथ ही उनकी आकृति से प्रकट होने वाले घोर निराशा और उदासी के भाव को देख कर शायद ही ऐसा कोई पाषाण-हृदय होगा जिसकी आँखों में आँसू न आ जायँ। इन देश के 'सर्वस्व'—आज दर-दर ठुकराए जाने वाले लोगों की—सेवा करना "भविष्य" अपना सब से बड़ा कर्तव्य समझेगा। वह उन लोगों का निडर होकर विरोध करेगा, जो इन सीधे और शान्त लोगों को लूटते और ठगते हैं। इन पर होने वाले अमानुषिक अत्याचारों की करुण-कहानी का नग्न-चित्र वह संसार के सामने उपस्थित करेगा और प्रत्येक सम्भव उपाय द्वारा वह उनको, उनके वास्तविक रूप और अत्याचार का निशान मिटा देने को तैयार करेगा।

हमारा देश केवल आर्थिक विषमता से ही पीड़ित नहीं है, वरन् यहाँ की सामाजिक विषमता भी बड़ी दुःखदायक है। इसके कारण भारतमाता की कई करोड़ सन्तानों को बिना किसी अपने दोष के, पशुओं से भी अधम और कष्टपूर्ण जीवन बिताना पड़ता है! हमारे यहाँ के अधिकांश कुलीन और उच्च जाति के समझे जाने वाले लोग उनके साथ जैसा निर्दयता और अन्याय का बर्ताव करते हैं, उसे देख कर ख़ून गरम हो उठता है! उन अभागों को इतना अधिक दबाया और कुचला गया है कि आत्म-सम्मान का भाव उनमें तिल भर भी शेष नहीं रहा है और वे अपने साथ होने वाले गर्हित और घृणित व्यवहार को स्वाभाविक-सा समझने लग गए हैं! सच पूछा जाय तो हम अपने अछूत-नाम-धारी भाइयों के साथ जैसा मनुष्यता-विहीन और असभ्यतापूर्ण बर्ताव करते हैं, उससे हमारे स्वराज्य अथवा स्वाधीनता के दावे का महत्व बहुत कुछ घट जाता है; जब हम अपने देश-भाइयों के साथ इस प्रकार का जघन्य बर्ताव कर सकते हैं तो अन्य देशों के निवासी हमारे साथ जो कुछ करें, थोड़ा है। यदि हम वास्तव में स्वराज्य के योग्य बनना चाहते हैं, तो हमको शीघ्र से शीघ्र इस कलङ्क से छुटकारा पाना होगा। हम इस पर विशेष ज़ोर इसलिए देते हैं कि अन्य कामों की तरह इसमें बाहरी बाधाएँ अधिक नहीं हैं और यह ख़ास कर हमारा मानसिक परिवर्तन हो जाने और मूर्खता-जन्य अहङ्कार को त्याग देने से ही बहुत कुछ पूरा हो सकता है। "भविष्य" इस पिशाचिनी प्रथा के विरुद्ध सदैव खड्गहस्त रहेगा और जात-पाँत के ढोंग की सदा पोल खोलता रहेगा। उसका उद्देश्य समस्त मनुष्यों के बीच सामाजिक एकता का प्रचार करना रहेगा और जातिगत तथा वंशगत उच्चता के सम्मुख वह कभी सर झुकाने को तैयार न होगा।

सम्पादक :—
श्री० रामरखसिंह सहगल

'भविष्य' का चन्दा

वार्षिक चन्दा ...	...	६) रु०
छः माही चन्दा	...	५) रु०
तिमाही चन्दा ...	...	३) रु०
एक प्रति का मूल्य	...	≡)

Annas Three Per Copy

भविष्य

[सचि]त्र राष्ट्रीय साप्ताहिक

आध्यात्मिक स्व[तन्त्रता] हमारा ध्येय, सत्य हमारा साधन और प्रेम हमारी प्रणाली है। [ज]ब तक इस पावन अनुष्ठान में हम अविचल हैं, तब त[क ह]में इसका भय नहीं, कि हमारे विरोधियों की संख्या और शक्ति कितनी है।

तार का पता :—
'भविष्य' इलाहाबाद

एक प्रार्थना

वार्षिक चन्दे अथवा फ़ी कॉपी के मूल्य में कुछ भी नुक़ताचीनी करने में पहिले मित्रों को 'भविष्य' में प्रकाशित अलभ्य सामग्री और उसके प्राप्त करने के असाधारण व्यय पर भी दृष्टिपात करना चाहिए!

वर्ष १, खण्ड २ | इलाहाबा[द]—बृहस्पतिवार; २५ दिसम्बर, १६३० | संख्या १, पूर्ण संख्या १३

बम्बई में महिलाओं की विराट सभा

भारतीय देवियों के छलकते हुए देश-प्रेम का एक साधारण नमूना



[ब]म्बई में 'गाँधी-दिवस' जिस उत्साह और समारोह से मनाया गया था, उसका समाचार पाठकों ने पत्रों में पढ़ा ही होगा। इन दिनों न जानें कितनी सभाएँ हुईं और कितनी बार हुई लाठियों की हृदयहीन वर्षा! यह चित्र महिलाओं की एक महती सभा का है, जिसमें हज़ारों महिलाओं ने भाग लिया था। ऊपर के घेरे में पाठक श्रीमती हंसा मेहता, बी० ए० को व्याख्यान देते हुए देखेंगे, जो हाल ही में जेल से लौटी हैं।

संस्था के प्रत्येक
तक और दूर-
ठक-पाठिकाओं से
की जाती है कि
क 'भविष्य' तथा
और विद्याविनोद-
ा का प्रचार
संस्था को और
वक सेवा करने का
प्रदान करेंगे !!

भविष्य

पाठकों को सदैव
स्मरण रखना चाहिए
कि इस संस्था के प्रका-
शन विभाग द्वारा जो भी
पुस्तकें प्रकाशित होती
हैं, वे एकमात्र भारतीय
परिवारों एवं व्यक्तिगत
मङ्गल-कामना को दृष्टि
में रख कर प्रकाशित का
जाता हैं !!

१, खण्ड ४ | इलाहाबाद—वृहस्पतिवार; ११ जून, १९३१ | सं० १, पूर्ण सं० ३७

ानपुर स्टेशन के पास बम फटा !

बई की राष्ट्रीय सभा पर शौकत-पन्थियों का आक्रमण !

भा में भाग लेने के कारण मुसलमानों ने पठानों को पीटा !!

महात्मा गाँधी से कानपुर को अपना केन्द्र बनाने की प्रार्थना

गवर्नर-गोली-काण्ड के अभियुक्त श्री० हरिकृष्ण भी लटका दिए गए !

[१०वीं जून की रात तक आए हुए 'भविष्य' के ख़ास तार]

म्बई का १०वीं जून का समाचार है कि डोंगरी थान में एक सार्वजनिक-सभा में, जहाँ डॉ० पं० जवाहरलाल नेहरू तथा श्री० अब्दुल ख़ाँ मौजूद थे और जहाँ दिल्ली के समझौते के में भाषण दिए जा रहे थे, कुछ साम्प्रदायिक -पन्थी) मुसलमानों ने उपद्रव मचाया और अन्त में उस पर ईंट और पत्थरों की वर्षा भी कहा जाता है कि इन मुसलमानों ने कोई ा ऐसे पठानों पर भी आक्रमण किया, जो ाग लेने की नीयत से उसमें सम्मिलित हुए ास ने आकर डण्डों के ज़ोर से मामला शान्त कुछ लोगों को चोटें भी आई हैं।

म्बई का ९वीं जून का समाचार है कि आज र कॉङ्ग्रेस की कार्यकारिणी समिति की बैठक ाल प्रान्तीय कॉङ्ग्रेस-कमिटी के निर्वाचन ेवादों का निबटारा करने के लिए श्री० एनी ए गए। दिल्ली के समझौते से देश में उत्पन्न परिस्थिति और भावी गोलमेज़-परिषद के स के मनोभावों पर भी विचार किया गया। कुछ निश्चय नहीं हो सका है।

ापुर का तार है, कि आज सवेरे स्थानीय स्टेशन के पास एकाएक बम का भीषण ा। स्टेशन के आस पास चारों ओर सनसनी कहा जाता है कि इस धड़ाके से केवल एक मनुष्य को चोट आई है।

तसर का ८वीं जून का समाचार है कि ञ्जाब नौजवान-भारत-सभा के अध्यक्ष श्री० को गिरफ़्तार कर लिया है। आप लुधियाना ए हैं।

ीं जून की रात का एक तार है कि, अभि- ालत में उपस्थित न होने के कारण, दिल्ली १६ जून के लिए स्थगित कर दिया गया। ाता है कि प्रतिवादी पक्ष के वकीलों की फ़ीस में, स्पेशल ट्रिब्यूनल ने स्थानीय सरकार से ा है।

—स्थानीय भटवरिया ग्राम में ज़मींदार और किसानों में दङ्गा हो जाने तथा वर्तमान साम्प्रदायिक दङ्गों की भीषणता के कारण, जिसमें अनेक लोग हता-हत हो चुके हैं—श्री० मुशीर हुसैन क़िदवई ने महात्मा जी को तार दिया है कि आप कुछ दिनों के लिए अपना हेड क्वार्टर कानपुर में ले आवें।

"भारत पूर्ण स्वाधीनता चाहता है"

प्रेज़िडेण्ट पटेल का अमेरिका को सन्देश

लन्दन का ५वीं जून का समाचार है, कि श्री० विट्ठलभाई पटेल ने अमेरिका के कॉङ्ग्रेस वालों को अपने सन्देशे में कहा है, कि भारत सार्वजनिक मताधिकार के आधार पर पूर्ण-स्वाधीनता चाहता है। इससे कम वह कुछ भी स्वीकार नहीं कर सकता। भारत को फिर आन्दोलन शुरू करना पड़ेगा। इसमें सन्देह नहीं कि एक समय आएगा जब ब्रिटेन को भारत के साथ समझौता करना ही पड़ेगा।

—बारडोली का ७वीं जून का समाचार है कि एक प्रेस-प्रतिनिधि से श्री० अब्दुल ग़फ़्फ़ार ख़ाँ ने कहा है कि केवल पेशावर में ही एक लाख से अधिक लालकुर्त्ती वाले सैनिक तैयार हैं। सरकार वहाँ की जनता को डराने के लिए सन्धि की शर्तों के विरुद्ध दमन नीति का पूर्ण उपयोग कर रही है। बहुत लोगों ने लगान नहीं चुकाया है, किन्तु केवल लालकुर्त्ती वालों पर ही लगान के लिए मामले चलाए जा रहे हैं। सीमाप्रान्त में लगानबन्दी-आन्दोलन का उतना ज़ोर नहीं था, किन्तु किसान लगान चुकाने में असमर्थ होने के कारण ही रुपए नहीं चुका सके हैं।

ख़बर है कि ख़ाँ साहब भूपाल भी गए थे, और वहाँ नवाब साहब तथा मौ० शौकतअली आदि लोगों से मिले थे; किन्तु "एकता कॉन्फ़्रेन्स" के द्वारा किसी प्रकार के साम्प्रदायिक समझौते की आशा नहीं है!

—लाहौर का ९वीं जून का समाचार है कि आज पुलिस ने 'केसरी' के ऑफ़िस की तलाशी ली और 'केसरी' की कुछ प्रतियाँ उठा कर ले गई, जिनमें अफ़-ग़ानिस्तान के भूतपूर्व अमीर अमानुल्ला ख़ाँ के सम्बन्ध में कुछ लेख प्रकाशित हुए थे।

—बम्बई का ७वीं जून का समाचार है, कि आज पं० जवाहरलाल नेहरू सिकन्दराबाद से यहाँ आए। यहाँ स्थानीय कॉङ्ग्रेस-कमिटी की ओर से आपका अपूर्व स्वागत किया गया। आपने एक सार्वजनिक सभा में गाँधी-इर्विन समझौते के सम्बन्ध में एक व्या-ख्यान भी दिया। आपने कहा कि वर्तमान परिस्थिति को देखते हुए यह नहीं कहा जा सकता, कि सन्धि कब भङ्ग हो जायगी। आपने आगे कहा कि यदि सत्याग्रह फिर शुरू हुआ तो इस बार का संग्राम पहले की अपेक्षा अधिक भीषण होगा।

—ग़ाज़ीपुर का ९वीं जून का समाचार है कि ८वीं जून को कारन्दा नामक स्थान में राष्ट्रीय कार्यकर्ताओं की एक सभा हुई थी, जिसमें केन्द्रीय किसान-सङ्घ के मन्त्री पं० मोहनलाल गौतम भी पधारे थे। आपने सङ्घ का उद्देश्य बतलाते हुए किसानों के सङ्गठन पर ज़ोर दिया। कार्यकर्ताओं ने भविष्य में इस ओर विशेष ध्यान देने का निश्चय किया है।

९वीं जून का मियाँवाली का तार है कि पञ्जाब-गवर्नर गोली-काण्ड के १८ वर्षीय अभियुक्त श्री० हरि-कृष्ण को भी आज प्रातःकाल ६ बजे फाँसी पर लटका दिया गया। न तो उनकी लाश उनके सम्बन्धियों को दी गई और न उन्हें अन्त्येष्टि क्रिया करने की आज्ञा ही मिली।

भविष्य

सचित्र राष्ट्रीय साप्ताहिक

आत्मिक स्वराज्य हमारा ध्येय, सत्य हमारा साधन और प्रेम हमारी प्रणाली। जब तक इस पावन अनुष्ठान में हम अविचल हैं, तब तक हमें इसका भय नहीं, कि हमारे विरोधियों की संख्या और शक्ति कितनी है।

इलाहाबाद—वृहस्पतिवार; १६ मार्च, १६३१

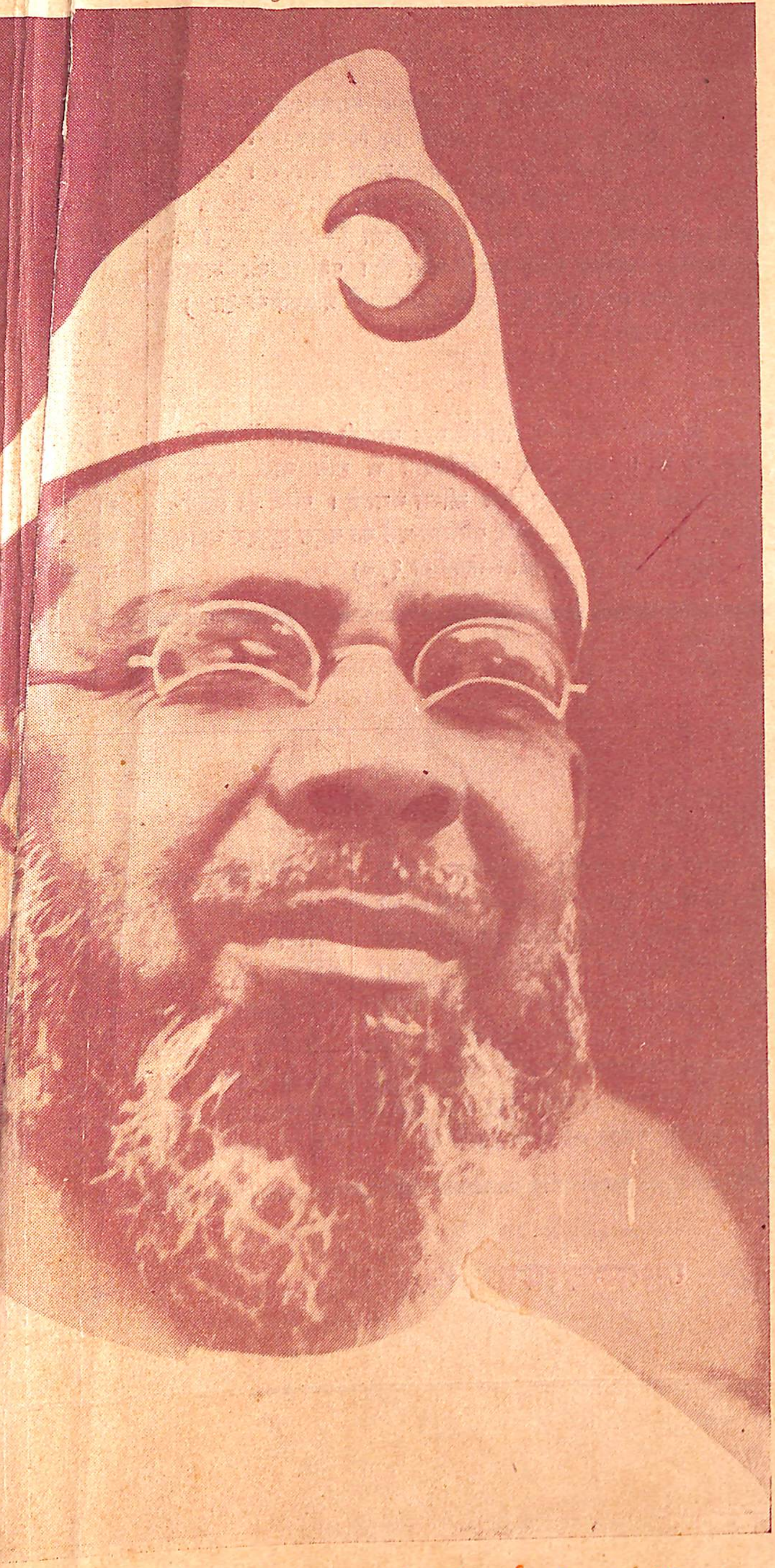
ष्य

पाठकों को सदैव स्मरण रखना चाहिए कि इस संस्था के प्रकाशन विभाग द्वारा जो भी पुस्तकें प्रकाशित होती हैं, वे एक मात्र भारतीय परिवारों एवं व्यक्तिगत मङ्गल-कामना को दृष्टि में रख कर प्रकाशित की जाती हैं !!

१६३१ | संख्या १, पूर्ण संख्या २५

ों का उपद्रव

संख्या १ ...या गया



मोहम्मदअली (आपके करांची षड्यन्त्र केस की कार्यवाही अन्दर देखिए)

। होगी
वराज्य-

जवाहरलाल
हुई उसमें
पिछले बारह
नहीं किया।
कि वे सदैव
र रहें। इस
जित होना
ते हैं और
का अवसर
ना चाहिए
। यह सन्धि

न्ध में कहा
तरह पालन
के छुटकारे
दिलाता हूँ
युद्ध फिर
प्रतिबन्ध
हए जावेंगे
में उन्होंने
ौर हिन्दू-
ार दिया।
त जवाहर
मालिकों
मिल एसो-
एक घण्टे
ारियों का
है।
सुप्रसिद्ध
ताओं की
हत होने
देयों को
ासतों ने
अवज्ञा
ड़ेया है।
कड़े हुए
ा और
कुछ भी

فکر و نظر



سدا طوفانِ بحرِ زیست میں زیر و زبر ہو کر
حباب آسا ابھرنا ہی کمالِ زندگانی ہے

ہندوستان کی نامور ہستیاں

حصہ اوّل

پبلیکیشنز ڈویژن

"نقش و نگار و رنگ و بُو تازہ بہ تازہ، نو بہ نو"

نقش و نگار

جوشؔ (ملیح آبادی)

کتب خانہ تاج آفس محمد علی روڈ بمبئی

مطبوعہ سلطانی بمبئی

الا ان اولیاء اللہ لا خوف علیہم ولا ہم یحزنون

الحمد للہ والمنۃ کہ کتاب مستطاب

پیراہن یوسفی

ترجمہ دفتر سوم

مثنوی مولوی معنوی

از طبع معارف آگاہ

مولوی محمد یوسف علی شاہ چشتی نظامی گلشن آبادی ملک مالوہ

در مطبع منشی نولکشور واقع لکھنؤ حلیۂ طبع پوشید

باہتمام بی۔ بی۔ کپور سپرنٹنڈنٹ

قیمت [illegible]

فہرست کتب

۱۸۹۶ء

مطبع

منشی نولکشور

مرتبین: چندر شیکھر، عبدالرشید

بعون خلاق زمین و زمان و فضل رزاق انس و جان

نظم دلربا کلام فرحت افزا مطبوع انام مرغوب خاص و عام موسوم بہ

قصہ حاتم طائی منظوم

تصنیف لطیف شاعر نازک خیال نادر کمال جناب منشی شنکر دیال صاحب مرحوم

مطبع نامی منشی نولکشور واقع لکھنؤ میں بار [illegible] چھپا

الا ان اولیاء اللہ لا خوف علیہم ولا ہم یحزنون

الحمد للہ والمنۃ کہ کتاب مستطاب

پیراہن یوسفی

ترجمہ دفتر دوم

مثنوی مولوی معنوی

از طبع معارف آگاہ

مولوی محمد یوسف علی شاہ چشتی نظامی گلشن آبادی ناسک مالوہ

در مطبع منشی نولکشور واقع لکھنؤ حلیۂ طبع پوشید

سنہ [illegible] ھ

باہتمام بی۔ بی۔ کپور سپرنٹنڈنٹ

[illegible]

قیمت [illegible]

خَیْرُکُمْ مَنْ تَعَلَّمَ الْقُرْآنَ وَعَلَّمَہٗ (صحیح بخاری)

تم میں بہترین شخص وہ ہے جو قرآن مجید سیکھے اور دوسروں کو سکھائے

عَلَّمَ الْقُرْآنَ

یعنی

قرآن مجید کا جدید قاعدہ

شیخ علی جواد بی اے لکچرر وصدر مجلس دینیات مسلم یونیورسٹی انٹرمیڈیٹ کالج علی گڑھ

مؤلّف

عقائد اسلام (برائے درجہ اطفال)، اُردو کا جدید قاعدہ۔ اردو کی جدید کتاب۔ سیرت حضرت امام احمد بن حنبل رحمۃ اللہ تعالیٰ

مترجم

کتاب الصلوٰۃ مصنفہ حضرت امام احمد بن حنبل رحمۃ اللہ تعالیٰ و ابواب جامع صغیر مصنفہ حضرت امام محمد شاگرد رشید حضرت امام ابوحنیفہ رحمہم اللہ تعالیٰ

باہتمام خانصاحب عبداللطیف خاں

جامعہ پریس جامع مسجد دہلی میں طبع ہوا ۱۳۵۴ھ ۱۹۳۵ء

(کاغذ سرورق ۔ پونڈ نمبر اول ۔ کاغذ کتاب ۲۰×۳۰ پونڈ نمبر اول ورق نمبر ۶)

ملنے کا پتہ:۔ شیخ علی جواد مسلم یونیورسٹی علی گڑھ

قیمت فی جلد دو آنے (۲/)

ماشاء الله لا قوة الا بالله

الحمد لله العزيز الغفار وصلى على نبيه سيد الابرار على توفيق طبع الرسالة التى تنحل بها غوامض المطالب فى الاسرار وتنكشف بها دقائق المآرب والاستار اعنى

لمعة الانوار فى اسرار الاوراد والاذكار

المعروف

بالهدية الحامدية

من افاضات منبع الفيوض والبركات مجمع العلوم والكمالات اسوة العرفاء عمدة الاتقياء مولانا الشاه محمد مهدى عطاه لا زالت شموس اذكاره واقمار افكاره لامعة بالاعتلاء

فى المطبع المعروف المنشى نولكشور الواقع فى لكهنؤ

جین اتہاس

(جسمیں مختصر تاریخ جین مفصل جیون چرتر سوامی جی و دیگر بزرگوں کے اور کچھ حال مفصل اکابر کا لفظ بہ لفظ ترجمہ درج ہے)

جسکو

پنڈت بھوپال جین دہلوی تحصیلدار انبالہ

نے

بہت سے پراکت سنسکرت۔ بھاشا اور انگریزی گرنتھوں سے اور ان یادداشتوں سے

جو مؤلف نے خود بمقام سرن بیلگول تحریر کی تھیں تالیف کیا

در مطبع ست بھوشن انبالہ شہر باہتمام

پنڈت رکھی کیش مالک مطبع طبع گردید

تعداد جلد ۱۰۰۰ بار اوّل قیمت عمر

نسخہ

مفید الاجسام

مع

فوائد عجیبہ

جس کے نسخوں کو ڈاکٹر فضل علی صاحب مرحوم نے اپنے
ذاتی تجربات کے بعد قلمبند فرمایا

باہتمام پنالال بھارگو سپرنٹنڈنٹ

مطبع منشی تیجکمار وارث نولکشور

لکھنؤ میں طبع ہوکر شایع ہوا

سنہ ۱۹۵ع — سیزدہم

قیمت ۱۳/ر

کتابُ النّحو

یعنے

عربی زبان کے علم نحو پر ایک نئی طرز کا رسالہ

مع کثیر التعداد امثلۂ مشقی و سوالات امتحانی و ترکیب جملات

مؤلفہ

حافظ عبدالرحمن صاحب امرتسری

مؤلف کتاب الصرف کتاب النحو۔ عربی بول چال ہر دو حصہ الصدیق۔ المرتضیٰ۔ سفرنامہ بلاد اسلامیہ و سیاحت ہند وغیرہ

ملنے کا پتہ

فرید اینڈ کو۔ جامع مسجد دھلی

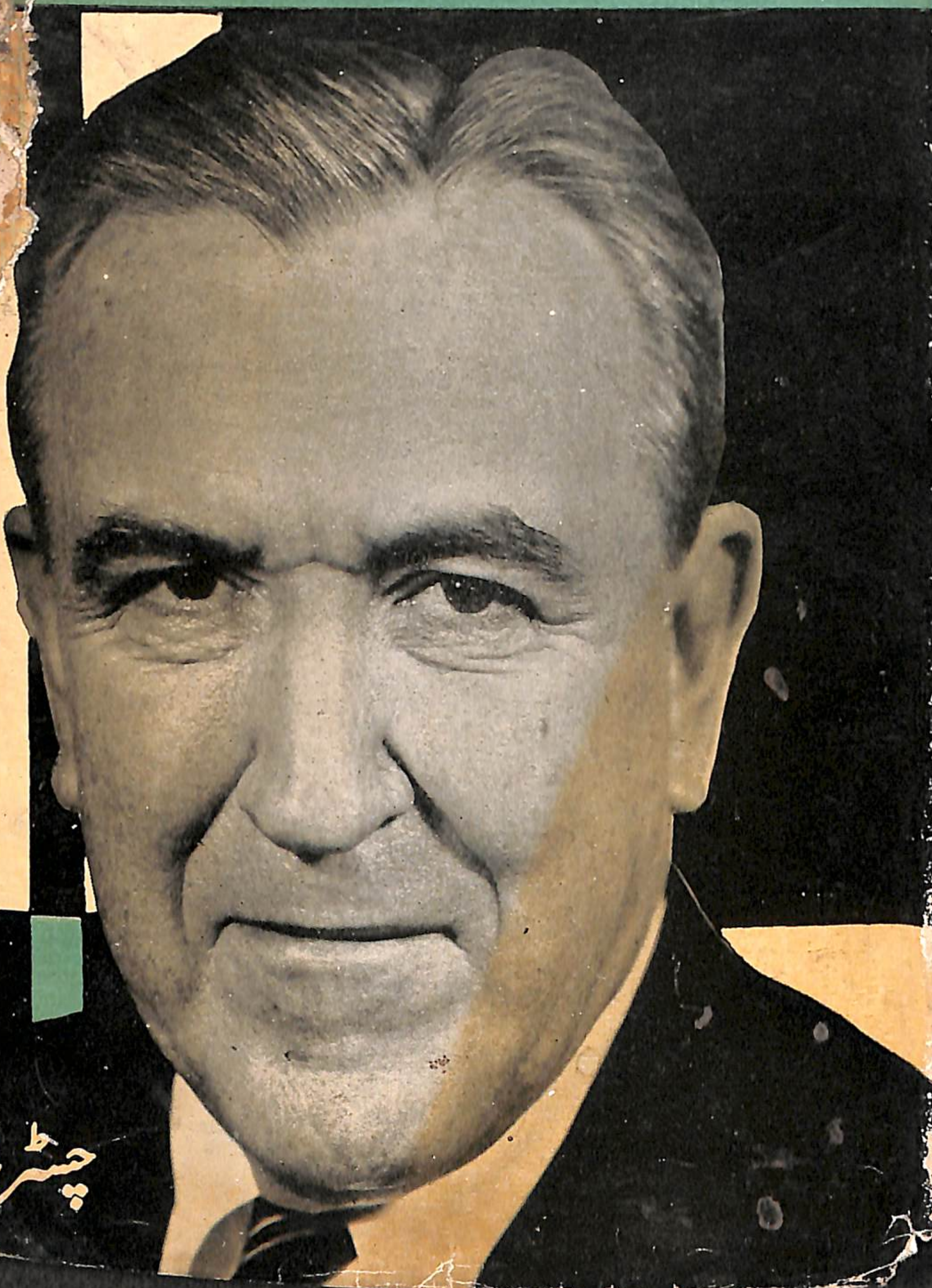
قیمت ایکروپیہ چار آنے (عہ)

شریمد بھگوت گیتا

دیباچہ طبع پنجم

اس صحیفہ متبرک شری مد بھگوت گیتا کے بار بار مطالعہ کرنے سے اور اصلی مطالب پر پیہم و رجا غور و
فکر سے مخفی اسرار جو سرسری نظر سے ذہن نشین نہیں ہوتے ہیں واشگاف ہوتے جاتے ہیں۔ جسقدر
نظر عمیق ہوتی جاتی ہے اوسیقدر دقیق مسئلہ جات خود بخود حل ہوتے جاتے ہیں اور قلب کو سکون اور اطمینان
حاصل ہوتا جاتا ہے چونکہ یہ متبرک صحیفہ تمام اوپنشد ہائے کا لب لباب ہے اور جملہ رموز سربستہ جو اوپنشدونمیں مندرج
ہیں اس صحیفہ میں مناسب مقام پر تعبیہ کرنے سے فہم کے نزدیک تر لائی گئیں ہیں اسلئے قلب انسان پر اونکا
اثر معاً محسوس ہوتا ہے اور تصدیق ہو جاتا ہے کہ جو بیان شرح و بسط کیساتھ اوپنشدونمیں کیا گیا ہے اور جسکا ربط اوس
موقعہ پر انسانی عملی زندگی اور طریقت سے معلوم نہیں ہوتا اپنے مناسب موقعہ پر بخوبی اور باسانی ظاہر ہو جاتا ہے ہر اشاعت
کے وقت اس امر کا لحاظ رکھا گیا تھا کہ ربط کلام کا سلسلہ بخوبی طالب کے ذہن نشین ہوتا چلا جاوے۔ اشلوکونکے تحت
اونکی لفظی معنی کے علاوہ پوشیدہ ضمیر کلام کا اظہار کردیا گیا تھا نفس مضمون ادھیا کا خاتمہ ادھیا پر مندرج کر کے جو امور ذہن نشین
کرائے جانے مطلوب تھے وہ سادہ عبارت میں درج کردیئے گئے تھے۔ طبع دوئم میں اوس تمام بحث و مباحثہ کا نتیجہ درج
ہوا تھا جو عالمان سنسکرت و عاملان طریقت سے مختلف اشلوکونکے معنی اور ضمیر کے متعلق ہو کر فیصلہ قرار پایا تھا۔ اور
تشریحات بہم [illegible] اونکو صاف اور سادہ عبارت میں قابل تفہیم بنایا گیا تھا طبع سوئم کے وقت پایا گیا تھا کہ خشیم
[illegible] شکوک ضمیر میں نوع طور پر پیدا ہوتے تھے اور جنکا ازالہ ہوتا قلب کے سکون میں
[illegible] تصویرات [illegible] پیش نظر کر کے طبع ثانی کی کوشش کیگئی تھی اور اس کوشش کا نتیجہ کامیابی ہوئی طبع
چہارم میں تلقین شریمد بھگوت گیتا کا خلاصہ اور ادھیاؤں کا ربط باہمی اور سلسلہ بموجب طریقت ہائے مروجہ سابقہ اہل ہنود و
طریقت جدید تلقین کردیا سری کرشن دیوتا پر یا تھا اور اس اہل ہنود کے طریقت کی مطابقت اہل اسلام کے مذہب صوفیہ سے ایک

انقلابِ عظیم



چسٹر باؤلز

द्विभाषा कोशमाला-3

हिंदी - उर्दू

व्यावहारिक लघु कोश

केंद्रीय हिंदी निदेशालय
शिक्षा तथा संस्कृति मंत्रालय
भारत सरकार

شعلہ و شبنم

"اس انجمن گل میں شعلے بھی ہیں شبنم بھی"

جوش (ملیح آبادی)

مکتبہ جامعہ دہلی

بار اوّل ۱۹۳۶ء قیمت ۳ؔ

العلم فریضة علیٰ کل مسلم و مسلمة

بفضل خالق ذو المنن بتائید رب زمن رسالہ فیض مقالہ مفید بخش طفلان
ابجد خوان پسند کردہ ماہرین فن

موسوم بہ

الف بائے فطن

از تصنیف

جناب حکمت مآب شاعر شیرین سخن حکیم مولوی سید ابو الحسن صاحب
المتخلص فطنؔ ابن سید دلدار علی صاحب متوطن موضع مانڈر ضلع سارن

باہتمام بابو منوہر لال بھارگو سپرنٹنڈنٹ

مطبع منشی نولکشور واقع لکھنؤ میں طبع ہوا



[illegible]

[illegible]

([illegible])

[illegible]

[illegible]

ڈاکٹر ذاکر حسین

کچھوا اور خرگوش



نیشنل بُک ٹرسٹ اِنڈیا

3.

Bostan

Matrajam.

بعون خالق کون و مکان و فضل خلاق زمین و زمان

درین زمان خجستہ عنوان شرح نادر بصیرت افزا المسمیٰ بہ

۱۹۱۴ء

دریکتا

شرح

[illegible]

۱۳۳۲ھ

مؤلفہ عالم اکمل فاضل اجل مولوی حافظ محمد نذیر صاحب رامپوری

در مطبع منشی نولکشور لکھنؤ بہ طبع مزین مطبوع جہان شد



وویکانند

رومیں رولاں

جرمن زبان کا شہرۂ آفاق ناٹک

فاؤسٹ

حصہ اول — جلد اول

مصنّف

یوحان ولفگنگ فان گوئٹے

مُترجم

بشیشور پرشاد، مُنوّر، لکھنوی

مکس مُلّر بھون

نئی دہلی (بھارت)

پھول اور رنگوں بھری زندگی



کاشی رام چاولہ

۷۸۶

شعر العجم

حصۂ سوم

فغانی سے ابو طالب کلیم تک

مادۂ تاریخ آغاز تصنیف
تاریخ عجم
۱۳۲۴ ہجری

مادۂ تاریخ اختتام تصنیف
تذکرہ
۱۳۲۵ ہجری

از

جناب **شبلی نعمانی** مرحوم

بفرمائش

شیخ مبارک علی تاجر کتب اندرون لوہاری دروازہ لاہور

سنہ ۱۹۲۴ء

در مطبع کریمی لاہور باہتمام میر قدرت اللہ طبع شد

قیمت عگر

غلام نقشبند کاتب امین آبادی

ومن یتوکل علی الله فهو حسبه

بهار دانش

...بع مصطفائی ۱۲۶۱ محمد مصطفی خان طبع ...

اردو غزل

مع

انتخاب

ڈاکٹر
یوسف حسین
عثمانیہ یونیورسٹی حیدرآباد دکن

مکتبہ جامعہ لمیٹڈ دہلی

قیمت عہ/ ۱

M. A. Jawaid.
B. A. IIIrd year

ارمغانِ حجاز

اقبال

اصلی - (باتصویر)

وڈی ہیر وارث شاہ



بھائی جواہر سنگھ کرپال سنگھ پستکاں والے امرتسر

Price 4-00

محرابِ غزل

روشؔ صدیقی

قیمت　مکتبہ جامعہ لمیٹڈ دہلی　تین روپے

با تصویر مکمل چہار حصے

الف لیلہ

یعنی ہزار داستان



جے ایس سنت سنگھ اینڈ سنز بکسیلرز۔ چوڑی والان دہلی ۶

جرمن زبان کا شہرۂ آفاق ناٹک

فاؤسٹ

حصہ اول

جلد دوم

مصنّف

یوحان ولفگنگ فان گوئٹے

مُترجم

بشیشور پرشاد، مُنوّر، لکھنوی

مکس مُلّر بھون

نئی دہلی (بھارت)

الا ان اولیاء اللہ لا خوف علیہم ولا ہم یحزنون

الحمد للہ والمنۃ کہ کتاب مستطاب

پیراہن یوسفی

ترجمہ دفتر اول

مثنوی مولوی معنوی

از طبع معارف آگاہ

مولوی محمد یوسف علی شاہ چشتی نظامی گلشن آبادی ناسک والا

در مطبع منشی نولکشور واقع لکھنؤ حلیۂ طبع پوشید

باہتمام بی ۔ بی ۔ کپور سپرنٹنڈنٹ

۱۹۲۴ء

قیمت ۱۲؍

الا ان اولیاء اللہ لا خوف علیہم ولا ہم یحزنون

الحمد للہ والمنۃ کہ کتاب مستطاب

پیراہن یوسفی

ترجمہ دفتر پنجم

مثنوی مولوی معنوی

از طبع معارف آگاہ

مولوی محمد یوسف علی شاہ چشتی نظامی گلشن آبادی ملک مالوہ

در مطبع منشی نولکشور واقع لکھنؤ حلیۂ طبع پوشید

باہتمام بی۔ بی۔ کپور سپرنٹنڈنٹ

قیمت ۳

ان دنوں توفیقِ خالقِ کون ومکان و فضل خلاقِ زمین و زمان سے

دیوان غافل

مطبع نامی منشی نولکشور واقع کانپور میں طبع [illegible] مقبول جہان ہوا

…مطول ہر ایک شائق کو چھاپہ خانہ سے
…ی ارزان ہے لیکن خاص اس کتاب کے
…بری درج کرتے ہیں تاکہ جس فن کی
…ے قصد ہو اوس کو آگاہی کا ذریعہ حاصل ہو۔

…دفتر بےمثال (۶) گنج تواریخ (۷) چشمۂ فیض
(۸) قند پارسی (۹) زبان ریختہ (۱۰) قطعہ منتخب
مصنفہ مولوی عبدالغفور خان بہادر۔ اور چند
رسالے اسی کلیات مذکور سے حسب تفصیل علٰحدہ بھی
فروخت ہوتے ہیں۔

(۱) شاہد عشرت حسب مراتب بالا۔
(۲) سخن شعرا حسب مراتب بالا۔
(۳) گنج تواریخ حسب مراتب بالا۔
(۴) زبان ریختہ حسب مراتب بالا۔
(۵) قطعہ منتخب۔ حسب مراتب بالا۔

کلیات صنعت۔ کلام میان کریم الدین صنعت۔

کلیات شاہ تراب۔ کلام عارف باللہ حضرت شاہ تراب کاکوری۔

کلیات نظیر اکبرآبادی

کلیات وہبی۔ کلام سخنور کامل منشی شیو پرشاد نبیرۂ او دھ اخبار تخلص وہبی۔

دیوان ذوق۔ کلام سید ابراہیم علی ذوق

دیوان فدا۔ جلد ثانی مسمی بہ ریاض گلفشان مصنفہ فدا حسین فدا۔

دیوان رند۔ مسمی بہ گلدستۂ عشق از نواب سید محمد خان رند

فسانۂ آزاد

جلد دوم

منم آن سحر بیان کز مدد طبع سلیم
منم آن بحر لبالب ز معانی کہ بود
فوج فوج است معانی بدلم در پر دلم
غنچہ از نسبت سحبان سخن عار کنند
آن خردمند حکیمم کہ بسرمایۂ عقل
گر بیاد سخنم عود بر آتش مانند

نبرد ناطقہ نام سخنم بے تعظیم
قطرۂ آب ز شرم سخنم دُرّ یتیم
ہمچو مرغان اولی اجنحہ در باغ نعیم
گر کنم طرز سخن باد صبا را تعلیم
گیرم اندر حرم جوہر کل نبض سقیم
حشر اموات شود ہر طرف از شمیم

طمع گوشۂ چشم است ز ارباب خرد
ورنہ مستغنیم از مال و منال و زر و سیم

بلبل ساخسار سحر طرازی عندلیب گلزار نکتہ پردازی حضرت شیخ جلال الدین عرفی شیرازی طاب ثراہ و جعل الجنۃ مثواہ کا یہ کلام فصاحت و ندرت التیام اگر میرے حسب حال ہوتا تو میرا جیب و دامن گوہر مقصود سے مالا مال ہوتا۔ مگر افسوس ؎

جہان بگشتم و دردا بہیچ شہر و دیار | نیافتم کہ فروشند بخت در بازار

خیر ؎

حافظ از مشرب قسمت گلہ بے انصافی است
طبع چون آب و غزلہای روان ما را بس

آغاز داستان

یہ تو اپنی ہیچمدانی کا ایک مجنونانہ بیان ہے۔ اب یہان سے آغاز داستان ہے۔

بحر زخار ناپیدا کنار مین ایک جہاز مثل محبوبان طناز اٹھکھیلیان کرتا چلا آتا ہے باد خنک و طرب انگیز کا جھونکا جگر تک کو سرد کیے پہونچاتا ہے سوائے لاجوردی آسمان اور نیلی چادر آب کے کالے کوسون تک کچھ اور نظر ہی نہین آتا ہے۔ کاروان سالار عشاق زار و سر قافلہ دلدادگان حسن و جمال خوبان فرخار میان آزاد عالی نژاد کو کبھی یاد صنم ناز فروش کبھی خیال وصال بت سنگین دل و ستم کوش گو لاکھ ضبط کیا مگر آنسو چشم خونچکان سے نکل ہی آئے کف افسوس ملکر یہ حسرت بار شعر زبان پر لائے ؎

چہ بے پروا کسے بودم کہ خود را | بہ بے پرواترے از خویش دادم

شب کا سہانا سمان۔ اختر و انجم نور افشان ضیائے قمر آرائش نور نظر سمک سے سما تک صفا پرور۔ باد مسرت انگیز بھوشون کے طرۂ تابدار کے طفیل مین غالیہ ریز تھی۔ عنبر بیز لخلخہ آمیز تھی جو لپٹ آتی تھی روضۂ رضوان کی خبر لاتی تھی حیرت تھی کہ یا الٰہی جہاز پر ناخدا نے ختن و تاتار بسایا ہے۔ یا خدا نے اپنی قدرت کاملہ سے سمندر مین عطر لنڈھایا ہے۔ یا باد صبا کی کارگزاری ہے یا کسی مرغولہ مو کے گیسوئے عنبرین کی مشکباری ہے۔ یہ زلف چلیپا ہے یا عود قماری ہے۔ آسمان بھی میرے ہی ماتم مین نیلی پوش ہے بحر کف برلب کا بھی مجھی شوربخت کے غم مین یہ جوش و خروش ہے ہائے عشق خرد سوز ہے۔ یا تیر جگر دوز ہے کشتی دل لبریز آب ہے سفینہ حباب ہے

تلاشِ حق

مصنفہ
بابو رام چرن لال صاحب - کلرک دفتر پوسٹماسٹر جنرل
ممالک متحدہ آگرہ و اودھ لکھنؤ

دوسری بار
باہتمام کیسر داس سیٹھ سپرنٹنڈنٹ
مطبع نولکشور لکھنؤ میں طبع ہوا
۱۹۳۰ع

[illegible]

بعون صناع مکین و مکان فضل خلاق زمین و زمان

جامع الاخلاق

ترجمہ اردو

اخلاق جلالی

مطبع نامی منشی نولکشور واقع کانپور مین طبع ہوا

اور باہتمام پنڈت شیام ناتھ منیجر اشاعت پائی

[illegible]

بحُسنِ توفیقِ تعالیٰ

درین ایّام فرخ التیام گنجینۂ وعظ و نصائح خزینہ اندرز و پند

اسم با مسمےٰ

مجموعۂ صد پند سُود مند

مع دیگر رسائل مشمُولہ

مثل رسالہ خواجہ عبداللہ انصاری تحفۃ الملوک و منہاج العارفین سعادتنامہ و مناجات

باہتمام کیسری داس سیٹھ سپرنٹنڈنٹ

در مطبع منشی نولکشور واقع لکھنؤ طبع شد

سنہ ۱۹۲۶ع

للعہ جزو
۲ ورق

بعون صانع مکین و مکان فضل خلاق زمین و زمان

منتخب کتاب عیار دانش تصنیف ابوالفضل متضمن حکایات کلیلہ و دمنہ مسمی بہ

نگار دانش

مرتبہ منشی نولکشور مالک مطبع بایراد عبارت و الفاظ اصل کتاب

در مطبع منشی نولکشور لکھنؤ زینت طبع مقبول جہان شد

ا ہہ جز